P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* (Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक व राजनीतिक परिदृश्य : अनुभवमूलक अध्ययन

शीतल मीना
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

सहरिया राजस्थान कि एकमात्र आदिम जनजाति हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य राजस्थान कि सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं उनमें राजनतिक चेतना के विकास के स्तर अध्ययन कर इसके उत्थान हेतु आवश्यक सुझाव देना है। किसी भी समाज के लोगो में राजनैतिक चेतना स्तर उसके मूलभूत अधिकारों से जुड़ा हुआ प्रश्न है। क्योंकि राजनैतिक चेतना का स्तर ही समाज में उसका स्थान निर्धारण करती हैं जिससे वे अपने अधिकारों का उपभोग कर सके। सहरिया जनजाति की परम्परागत जातीय पंचायत रही हैं। वर्तमान में महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता के चलते राजनीतिक प्रश्नों में समझ बढ़ी है किंतु यह सब एक अंश मात्र ही हैं। आज भी बहुसंख्यक सहरिया जनजाति के मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। यद्यपि राज्य सरकार द्वारा सहरिया जनजाति के विकास हेतु पृथक से सहरिया विकास योजना चलायी जा रही हैं किंतु राजनीतिक चेतना के विकास हेतु आवश्यक शिक्षा का अभाव के चलते जिससे इनका समुचित रूप से राजनीतिक सशक्तिकरण नही हो सका हैं। वर्तमान में सहरिया समुदाय एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। इस दिशा में सरकारी प्रयासों के साथ गैर–सरकारी संगठनों के सहयोग की आवश्यकता है। तभी इस आदिम जनजाति का संरक्षण हो सकेगा।

मुख्य शब्द : सहरिया आदिम जनजाति, राजनैतिक चेतना स्तर, मूलभूत अधिकार, महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता, शिक्षा का अभाव, सरकारी गैर–सरकारी आदि।

प्रस्तावना

भारत के इतिहास में राजस्थान प्रान्त अपनी वीरता, शौर्य, और देशभक्ति तथा बलिदान के कारणों से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। राजस्थान राज्य अपने वर्तमान स्वरूप के अन्तर्गत 1 नवम्बर 1956 को अस्तित्व में आया। राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक 'एनल्स एण्ड एन्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान' (1829 लन्दन) में किया। वैदिककाल में राजस्थान रेगिस्तानी व जंगली प्रदेश था जहाँ खनाबदोश चरवाहे और आदिम जनजातियाँ निवास करती थी।[1] राजस्थान भारत का ऐसा राज्य हैं जिसमें विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष से लेकर आधुनिकतम विकास के अन्तर्गत इंदिरा गाँधी क्षेत्र में नवीन व सुनियोजित ग्राम व मण्डियाँ शामिल है। हस्तशिल्प, कला, नृत्य एवं गीत–संगीत की प्राकृतिक रंगीनियों के साथ–साथ कोटा में आधुनिक परमाणु विद्युत गृह, खेतडी व देबारी में ताम्र व जस्तें के कारखाने इस राज्य की प्राचीनता और नवीनता को एक ऐसी तारतम्यता में बाँधते है कि राजस्थान का भौगोलिक अन्तरिक्ष असीम हो जाता है। रेगीस्तान की स्वर्णिम बालू में विचरण करने वाले चरवाहों से लेकर अरावली तथा पठारी जंगलों में स्वच्छन्द निवास करने वाली जनजातियाँ राजस्थान की ही नही वरन् सम्पूर्ण भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर है। कर्नल टॉड़ की पुस्तक 'एनल्स एण्ड एन्टिक्विटिज़ ऑफ राजस्थान' गौरीशंकर हीराचंद ओझा, शेरिग आदि की पुस्तको के सन्दर्भो से ज्ञात होता है कि भील लोग ही दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी राजस्थान के मूल निवासी थे। भीलों को पराजित करके राजपूतों ने अपना राज्य स्थापित किया। राजस्थान में ये जनजातियाँ अरावली पर्वतमाला की घाटियों, तलहटियों, पठार एवं वन प्रदेशों मे फैली हुई है। यह पर्वतमाला गुजरात के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र से प्रारम्भ होकर राजस्थान में से गुजरती हुई दिल्ली तक विस्तारित है।[2]

2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,621,012 है जिसमें 35,620,086 पुरूष एवं 33,000,926 महिलाएँ है तथा लिंगानुपात 926 है।[3] 2001 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में जनजातियों की कुल जनसंख्या 7097706 है जो इसकी कुल जनसंख्या का 12.56 प्रतिशत

है। देश मे जनजातियों की जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान का स्थान छठा है। 2001 की जनगणना के अनुसार राजस्थान मे प्रति 1000 पुरूषो के पीछे 922 स्त्रियाँ है जबकि जनजातियों में यह प्रतिशत 1000 पुरूषों पर 944 स्त्रियां है।[4]

राजस्थान में जनजातियों में भौगोलिक आधार पर स्थिति को निम्न तीन क्षेत्रों मे विभाजित किया जा सकता है :–

दक्षिणी पूर्वी राजस्थान

यह वह क्षेत्र है जिसमें राजस्थान राज्य में स्थित जनजातीय जनसंख्या का लगभग आधा भाग निवास करता है। इसके अन्तर्गत अलवर, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, जयपुर, अजमेर, टोंक, कोटा, बूँदी, झालावाड़ एवं भीलवाड़ा जिले तथा सिरोही, उदयपुर, चित्तौडगढ़ जिलों की कुछ तहसीलें आती है। इस क्षेत्र में मुख्यतः भील, मीणा, भील–मीणा, सहरिया आदि जनजातियाँ है। यह क्षेत्र तुलनात्मक रूप से जनजातीय संदर्भो मे अधिक विकसित क्षेत्र है।

पश्चिमी राजस्थान

इस क्षेत्र के अन्तर्गत राजस्थान के 11 जिले सम्मिलित हैं : झुंझुनू, सीकर, चूरू, गंगानगर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेंर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर तथा जालौर। इस क्षेत्र मे निवास करने वाली जनजातियों में भील एवं मीणा है। राजस्थान के इस क्षेत्र में तुलनात्मक जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत 7.14 है।

दक्षिणी राजस्थान

इस क्षेत्र में बाँसवाड़ा, डूँगरपुर एवं उदयपुर जिले की सात तहसीलें–गिर्रा, धरियावद, सलूम्बर, सराड़ा, कोटड़ा, खैरवाड़ा व झाडोल आदि, चित्तौड़गढ़ जिले की प्रतापगढ़ और अरनोद तहसील और सिरोही जिले की आबूरोड़ तहसील आदि आते है। राजस्थान की कुल जनजातीय जनसंख्या का 43.8 प्रतिशत इसी भू–भाग में निवास करता है। प्रमुख जनजातियों मे भील, मीणा, गरासियाँ व डामोर आदि हैं।

यदि निवास के आधार पर राज्य की जनजातीय जनसंख्या का विश्लेषण करे तो पाएगे कि 70 प्रतिशत भील बाँसवाड़ा, डूँगरपुर एवं उदयपुर जिले में और शेष 30 प्रतिशत राजस्थान के अन्य भागों मे बिखरे हुए है। मीणा जनजाति का 51.19 प्रतिशत भाग जयपुर, सवाईमाधोपुर तथा उदयपुर जिलों मे और शेष भाग अलवर, चित्तौड, कोटा, बूँदी एवं डूँगरपुर जिलों मे हैं। गरासियाँ जनजाति का सर्वाधिक जमाव उदयपुर जिले में (56.63 प्रतिशत) इसके बाद पाली में (20.11 प्रतिशत) व सिरोही में (19.74 प्रतिशत) है। इन तीन ज़िलों मे गरासियों का 96.48 प्रतिशत भाग निवास करता है। ड़ामोर जनजाति का 96.82 प्रतिशत भाग केवल डूँगरपुर जिले में निवास करता हैं। डूँगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति में इनकी जनसंख्या सर्वाधिक है। सहरिया जनजाति का 99.47 प्रतिशत भाग कोटा जिले में है। कोटा की ष्शाहाबाद पंचायत समिति में इसकी संख्या सर्वाधिक है। भील मीणा जनजाति का 61.94 प्रतिशत भाग जालौर जिले में, 18.07 प्रतिशत बाँसवाड़ा जिले में, 7.95 प्रतिशत भाग अजमेर जिले में तथा 6.38 प्रतिशत भाग डूँगरपुर जिले में हैं। अन्य जनजातियों में भारवा, टाडवी, वालवी, काठौडिया, कालीधोर, नेकदा, पटिलिया, भील–गरासिया, ढोली, भील, पावरा आदि है। इनका अधिकांश भाग सिरोही जिले में निवास करता है।[5]

अनुसूचित जनजातियों के अतिरिक्त राज्य के विभिन्न भागों मे ऐसे समूह भी निवास करते हैं जो अनुसूचित समुदाय तथा खनाबदोश समूह हैं। इनके अतिरिक्त एक अन्य आदिवासी समूह ओर निवास करता है, जिसे अर्द्ध खानाबदोश आदिवासी कहते हैं। अनुसूचित समुदाय में बोरी, कंजर, सांसी, बागरी, जट, भाट आदि सम्मिलित है। खनाबदोश आदिवासियों मे बंजारा, गाड़ोलिया लोहार, कालबेलिया, सिकलीगर एवं कुछ दूसरे समूह सम्मिलित किए गए हैं। अर्द्ध खनाबदोश आदिवासियों में रेबारी, जोगी, मसानी और अन्य समूह आते हैं।[6]

राजथान की सहरिया जनजाति : इतिहास एवं संस्कृति

सहरिया मूलतः मध्यप्रदेश के निवासी है, जो मध्यप्रदेश के गुना ज़िलें के सीमा से लगे हुए हाँराँ ;पूर्व कोटाद्ध ज़िलें की श्शाहाबाद और किशनगंज तहसीलों में इनकी संख्या सर्वाधिक है। सहरिया राजस्थान का एक मात्र 'आदिम जनजाति' समूह है। कोटा ज़िलें का यह सहरिया बाहुल्य क्षेत्र 1991 से नये बने बॉरा ज़िलें में आता है। दूसरा सहरिया बाहुल्य ज़िला चित्तौड़गढ़ तीसरा स्थान झालावाड़ का है। देश के भिन्न– भिन्न भागों में अलग– अलग नामों से पुकारा जाता है यथा सवारा, सोरा, सओरा आदि। ऐसी मान्यता हैं कि इन्ही शब्दों से मूल शब्द सहरिया की उत्पत्ति हुयी है। ऐसा माना जाता हैं कि मुस्लिम शासकों ने इन्हे जंगल में निवास करने के कारण 'सहरिया' नाम दिया। इस जनजाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में नायक ने इसका शाब्दिक अर्थ साहरिया ; सा से साथी एवं हरिया से शेरद्ध का मतलब शेर का साथी होना बताया। इस मान्यता से स्पष्ट होता है कि सहरिया मूलतः आदिम जाति समूह थे।[7]

श्री गौंड ने अपने एक लेख में सहरियों की उत्पत्ति का उल्लेख करते हुए बताया कि श्शाहाबाद की प्राचीन इमारतों के शिलालेख को देखने एवं यहाँ के निवासियों से बातचीत करने से विदित होता हैं कि शेरशाह सूरी ने श्शाहाबाद के दुर्गम दुर्ग का निर्माण इनके परिश्रम से ही करवाया था। शेरशाह ने सहरियों के कठोर परिश्रम की प्रशंशा की हैं यह जनजाति एकदम जंगली होने के तथा गोंद, चिरौंजी व वनों से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं को विक्रय करने वाली बताया है।[8]

सहरिया शब्द का सन्धि विच्छेद करने पर सह +आर्य होता हे। अर्थात आर्य के समान अथवा आर्यो के वंशज या सहायक माने गये हैं।[9] एक अन्य मत के अनुसार सहरिया शब्द की उत्पत्ति फारसी के 'सहारा' शब्द से हुयी है। जिसका तात्पर्य वन अथवा जंगल से लगाया जाता है। इस आधार पर सहरिया शब्द का अर्थ 'वन के निवासी' माना गया है। कुछ विचारको ने 'सहर' का तात्पर्य प्रातःकालीन भोजन अथवा नाष्ते से भी लिया है। जिसका अर्थ है अल्पमात्रा में भोजन उपलब्ध होना, क्योंकि सहरिया जनजाति को भी अल्पमात्रा में भोजन उपलब्ध होता है। अतः सहरी शब्द से इनकी उत्पत्ति

हुयी है। कालान्तर में ये सहरिया कहलाये गये। आइने अकबरी ग्रन्थ के रचियता अबुज फजल ने भी अपने ग्रन्थ में सहरिया जनजाति का उल्लेख किया है तथा उन्हे सूखरित एवं सदाश्यता से युक्त माना है। मुगलकाल में इस जनजाति को सहरी कहा गया है। सहरिया की उत्पत्ति 'सहरा' से मानकर इन्हे मरूस्थल के निवासी माना जाता है।[10]

प्रस्तुत शोधपत्र राजस्थान के बारा जिले कि किशनगंज एवं श्शाहाबाद तहसील जो कि सहरिया बहुल क्षेत्र हैं के 100 सूचनादाताओं के साक्षात्कार पर आधारित है। साक्षात्कार के माध्यम से ज्ञात हुआ कि सहरिया जनजाति के लोगो खासकर युवाओं को अपनी जनजाति उत्पत्ति के संबन्ध में कोई जानकारी नही है। सहरिया जनजाति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सहरिया समाज के स्त्री–पुरूषों, बडे–बुजुर्गो एवं गुणीजनों से बातचीत करने पर विभिन्न मत हमारे सामने प्रकट होते जिनका विवरण इस प्रकार हैं–

1. सहरिया जनजाति की उत्पत्ति कैसे हुयी है संबन्ध में हमें कोई जानकारी नही है।
2. इसकी जानकारी हमारे समाज के बडे–बुजुर्गो को होगी।[11]
3. चूँकि इस जनजाति के व्यक्ति गरीब है इसलिए इन्हे सहरिया कहा जाता है।[12]
4. सहरिया जनजाति की उत्पत्ति भील जनजाति से हुयी है।[13]
5. हमारी जनजाति के तीन पीढ़ियो से यही जंगलो में रहती आयी हैं इसकी हमें जानकारी नही हैं कि इन्हे सहरिया क्यों कहा जाता है।[14]
6. हम लोग पहले जंगलो व पहाडों में शिकार करके खाया करते थे बाहर का कोई भी व्यक्ति हमारे बारे पूछता तो उन्हे यह बताया जाता कि हम जंगल में शिकार करने गये हैं। यह पूछने पर कि क्या हम वह शेरों से नही डरते कि तो जवाब मिलता की वे तो खुद ही शेर हैं तब से ही हमारी जात का नाम सहर पडा।[15]
7. सहरिया जनजाति की उत्पत्ति वाल्मीकि से हुयी है। ये मूलतः भील ही है जो बाद में भील ठाकुर और वर्तमान में सहरिया के नाम से जाने जाते है।[16]
8. सहरिया जनजाति के लोग लगभग तीन पीढ़ियों से पूर्व आम नागरिको की तरह मैदानी भागो में रहते थे लेकिन मुगलकाल में आगरा एवं सल्तनतकाल में दिल्ली में सजायाफ्ता कैदियों, मजदूरों को जंगल जड़ी–बूटी एकत्र करने भेज दिया जाता था जो कि बाद में धीरे–धीरे उन्ही जंगलों में बस गये और कालान्तर में ये ही सहरिया कहलाये। इसकी पुष्टि उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा से भी होती है जिसमें ब्रजभाषा का पुट पाया जाता है।[17]

इस प्रकार सहरिया जनजाति की उत्पत्ति के संबन्ध में कोई प्रमाणिक एवं निश्चित अवधि व स्थान विशेष का उल्लेख नही मिलता है। केवल मात्र यह माना जाता हैं कि जंगल के निवासी होने के कारण शेर शब्द से इन्हे सहरिया माना जाने लगा।

सहरिया जनजाति का राजनीतिक परिदृश्य

किसी भी सामाजिक व्यवस्था में नियमितता व नियंत्रण बनाये रखने के लिए जो संगठन कार्य करते है उन्हे राजनीतिक संगठन के नाम से जाना जाता है। चाहे इन राजनीतिक संगठनों अथवा व्यवस्थाओं का स्वरूप परम्परागत रूप से मान्य राज्य व सरकार से भिन्न ही क्यों न रहा हों। ये राजनीतिक संगठन समाज के विभिन्न सदस्यों या संगठनों के मध्य सम्बन्धों का संचालन करते है। तथा आवश्यकता पड़ने पर नियंत्रण बनाये रखने के लिये दबाव का प्रयोग करते है।

राजनीतिक संगठन के स्वरूप के बारे में विशेष अध्ययन विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्था को समझने के सन्दर्भ में द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् प्रारम्भ हुआ। जिसमें पश्चिमी उदारवादी प्रजातन्त्रीय संस्थाओं से परे विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्था को समझने का प्रयास किया गया। शपेरा ने अपने अध्ययन 'गर्वमेंन्ट एण्ड पॉलिटिक्स इन ट्राइबल सोसाइटीज'[18] में लिखा हैं कि आस्ट्रेलिया की तथा दक्षिण अफ्रीका की जनजातियों में प्रादेशिक स्थिरता नही होने के बावूजूद राजनीतिक वयवस्था के लक्षण विद्यमान थे। क्योंकि वे बन्धुत्व के नियम से बाध्य नही थें।

सहरियाओं का कभी भी राजनीति में हस्तक्षेप नही रहा और नही ये कभी शासकों के समीप रहे हैं। ये हमेशा उपेक्षित ही रहे है। सहरियाओं का पृथक्करण पहली बार ब्रिटिश काल में टूटा जब सरकार ने इनके सघन वनों की कटाई करवाकर सड़को का निर्माण किया। जिसके फलस्वरूप इनके समक्ष रोजी –रोटी का संकट पैदा हुआ। सहरिया जनजाति में भी अन्य आदिवासी समुदायों के समान ही परम्परागत राजनीतिक संगठन पाया जाता है। जिसकी समाज में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सहरिया अन्य आदिवासियों के समान गाँव से बाहर या अलग स्थान पर रहना पसन्द करते है। सहरिया अपनी बस्ती को सहरना कहते है। सहरना में एक ही गोत्र के व्यक्ति निवास करते है। सहरना के बीच एक छतरीनुमा गोल झोपड़ी बनाते है। जिसे 'बंगला' कहा जाता हैं। 'बंगला' सहरना की सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र होता है। सहराने में आये किसी व्यक्ति के मेहमान को इस बंगले के अन्दर ही ठहराया जाता है। सहरिया समुदाय में गोत्र व्यवस्था सुदृढ़ होती है। परिवार को इनके यहाँ कुटम्ब कहा जाता है। इन लोगो के परिवार पितृसत्तात्मक होते है।[19]

सहरिया में सहरना के आधार पर ही पंचायत का गठन किया जाता है। इसका प्रमुख 'पटेल' होता है। पटेल का पद वंशानुगत होता है। सहरिया जनजाति में जाति पंचायत का काफी प्रभाव रहा है। यह आपसी विवादों को निपटाती है। इनकि पंचायत किसी अपराध के लिए हरजाना, प्रायष्चित व जाति बहिष्कृत का निर्णय करती है। सहरिया पंचायत के तीन स्तर है –

(1) पंचताई पंचायत (सहरना स्तर)
(2) एकादशिया पंचायत (11–12 गाँवों की पंचायत)
(3) चौरासिया पंचायत (84 गाँवों की पंचायत)

सहरिया समुदाय द्वारा किसी भी प्रकार का बड़ा निर्णय अंतिम चौरासिया पंचायत द्वारा किया जाता है।[20]

कोटवार, बराई, भोपा, और हथनरिया तथा गाँव के वयोवृद्ध सहरिया पंचायत में पाँच पंच के रूप में काम करते है। बिना पटेल व प्रधान के पंचायत के कोई भी सामाजिक व धार्मिक कार्य करना संभव नही होता है। पटेल समाज की समस्याओं को गाँव की पंचायत में ही निपटाने का पूरा प्रयास करता है।[21]

पटेल यदि किसी प्रकार की अकुशलता या अपराध कर देता है तो उसे उसके पद से हटा दिया जाता है और उसके स्थान पर दूसरा पटेल चुन लिया जाता है। पंचायत में महिलाओं की कोई हिस्सेदारी नही होती इनके बंगले में औरते नही जा सकती है क्योंकि वह दूसरे गाँव से लाई गई होती हैं वह उस गाँव की सदस्य नही मानी जाती। कभी –कभार अनिवार्य हो तब स्त्री की मरजी जानने के लिए उसे पंचो के सामने बुलाया जाता हैं। पंचायत का निर्णय हर स्त्री को मानना अनिवार्य होता है, केवल बस्ती की लडकी ही वहाँ जा सकती है। परित्यक्ता या बेसहारा लडकी के माँ–बाप पंच होते हैं वह पंच की लडकी कहलाती है। अतः उसके पालन–पोषण से लेकर विवाह तक की जिम्मेंदारी पंचो की होती है।[22]

निवर्तमान राजनीतिक परिदृश्य पर नजर डाले तो पता चलता हैं कि बाह्य समाज के सम्पर्क के परिणामस्वरूप जनजातियों कि राजनीतिक चेतना में उत्तरोतर प्रगति हुयी है। स्वतन्त्रता के बाद जैसे–जैसे न्यायालय व पुलिस का प्रभाव बढा हैं जनजातीय पंचायतो का प्रभाव कम हुआ है। वर्तमान समय में सहरिया जनजाति के लोग आपसी विवादों का निपटारा करने के लिए थाने या पुलिस की सहायता लेते हैं जिससे उनकी पारम्परिक पंचायतो की शक्तियों का ह्रास हुआ हैं उनका मानना हैं कि पंचायतो के द्वारा निर्णयन में देरी एवं हर्जाने की राषि न दिला पाने की वजह से लोग पुलिस की मदद लेना अधिक पसन्द करते है।[23]

राजनीतिक जागरूकता के आँकलन के सम्बन्धित प्रष्न के प्रत्युतर से मालूम हुआ कि सहरिया समाज में महिलाएँ मतदान में पुरूषों से अधिक बढ.–चढ. कर हिस्सा लेती हैं। मतदान महिलाओं के लिए किसी पर्व से कम नही जहाँ वे नाचते–गाते हुए जाती है। मतदान करते समय उनकी प्राथमिकता प्रत्याशी की योग्यता से अधिक एक दल विशेष को ही जीताना होता हे जिसे वे वर्षो से जीताते आये है। आम भारतीय महिलाओं की तरह उनके लिए सरपंच आज भी सरपंच पति हैं चाहे वहाँ से महिला सरपंच विजयी हुयी हों।[24]

वर्तमान में सम्पूर्ण सहरिया समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। समाज की नयी पीढी अपनी परम्परा, संस्कृति एवं इतिहास को विस्मृत करती जा रही हैं। सरकार के द्वारा चलाये जा रहे विकास कार्यक्रमो के बावूजूद इनमें अभी पूर्ण चेतना का विकास नही हो पाया है। सहरिया लोगो में संचय की प्रवृत्ति का आरम्भ से ही अभाव रहा है। इन पर 'आज कमाया आज गँवाया' वाल कहावत चरितार्थ होती है। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल, शौचालय सुविधा, चिकित्सा सुविधा का भी अभाव है। वस्तुतः आज सहरिया जनजाति के लोग गरीबी, नाखोरी, अशिक्षा के चक्रव्यूह में फँसे दिन–प्रतिदिन क्षीण हो रहे है। निष्कर्षतः सहरिया जनजाति के विकास हेतु किये गये सांवैधानिक प्रावधानों का लाभ तब तक उन्हे नही मिलेगा जब तक की इनके मानवविकास पर ध्यान केन्द्रित नही किया जायेगा।[25] मानवविकास की अवधारणा अपनी प्रकृति से ही व्यक्तियों के स्वास्थ्य, शिक्षा एवं गरिमामय रहन–सहन से जुडी हुयी है। अतः जब व्यक्ति स्वस्थ एवं शिक्षित होगे तो वे स्वतः ही अपने अधिकारो के प्रति जागरूक होगे और मानवाधिकारों का हनन भी कम होगा। देश की धरोंहर हमारी जनजातियों का संरक्षण भी हो सकेगा ।

अंत टिप्पणी

1. *प्रकाश चन्द्र मेहता, आदिवासी संस्कृति एवं प्रथाएँ, डिस्कवरी पब्लिकशिंग, हाउस नई दिल्ली 2009 पृ. 228–229*
2. *श्रीचंद जैन, वनवासी भील और उनकी संस्कृति, रोशनलाल जैन एण्ड सन्स जयपुर 1973 पृ. 1–2*
3. *सेंसस ऑफ इंड़िया –2011 प्रोविजनल पॉपुलेशन टोटल्स, फिगर एट ए ग्लेन्स इंड़िया, जुलाई 2011 तक उपलब्ध तथ्यों पर आधारित*
4. *सेंसस ऑफ इंड़िया राजस्थान –2001*
5. *प्रकाश नारायण नाटाणी, अपना राजस्थान, राजस्थान का सामान्य ज्ञान एवं राजस्थानी कला एवं संस्कृति, पिंकसिटी पब्लिशर्स जयपुर 2011 पृ. बी 101*
6. *प्रकाश चन्द मेंहता, भारत के आदिवासी, शिवा पब्लिशर्स एवं डिस्टीब्यूटर्स, उदयपुर–1993 पृ. 20*
7. *प्रकाश चन्द मेंहता, नोट–6*
8. *वन्यजाति : खण्ड 9, क्रमांक 4, 1961 पृ. 140–141*
9. *रामचन्द्र पलात, राजस्थान की वनविहारी जनजातियाँ, जयपुर पृ. 75*
10. *याकूब अली खान, ट्राइबल लाइफ इन इंडिया, आर. बी.एस.ए.जयपुर 2000 पृ.45*
11. *साक्षात्कार, रामकरण, तेजाजी का डाँडा, किशनगंज, बाँरा*
12. *साक्षात्कार, गिर्राज, गजरेटा, श्शाहाबाद, बाँरा–2010*
13. *साक्षात्कार सन्तोष, सहरिया बस्ती, किशनगंज, बाँरा*
14. *साक्षात्कार, मुकेश, इन्द्रा आवास किशनगंज, बाँरा*
15. *साक्षात्कार, ओमप्रकाश, कैलवाडा–श्शाहाबाद, बाँरा*
16. *साक्षात्कार, निर्मला सहरिया, विधायक किशनगंज –शाहाबाद, बाँरा*
17. *साक्षात्कार, जे.पी. त्यागी, पूर्व ए.डी.एम. किशनगंज –शाहाबाद, बाँरा*
18. *आई. शपेरा., गर्वमेंन्ट एण्ड पॉलिटिक्स इन ट्राइबल सोसाइटीज, लन्दन–1956*
19. *रश्मि श्रीवास्तव, सहरिया जनजाति : साहित्य एवं संस्कृति, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2012 पृ.10–15*
20. *प्रकाशचन्द्र मेहता, आदिवासी संस्कृति एवं प्रथाएँ, डिस्कवरी पब्लिकशिंग, हाउस नई दिल्ली 2009 पृ. 239*
21. *बसन्त निरगुणे, 'सहरिया' मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला मंडल, भोपाल– 1990*
22. *नोट–19, रश्मि श्रीवास्तव, सहरिया जनजाति : साहित्य एवं संस्कृति, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2012 पृ.27*

23. *साक्षात्कार, मुकेश, भरोसीबाई, उर्मिला, अरूण, इन्द्रा आवास किशनगंज, बाँरा*
24. *साक्षात्कार, राधा, रेशमा, हरिओम, गोविन्दीबाई, सिमराना गाँव, शाहाबाद, बाँरा*
25. *शीतल मीना, जनजातियों मानवाधिकार एवं मानवविकास, पोइन्टर पब्लिकेशन जयपुर, 2012 पृ. 111*

वेबसाइट

http://tad.rajasthan.gov.in/
http://baran.nic.in/
il: covdnhrc[at]nic[dot]in, ionhrc[at]nic[dot]in
Report of the Independent Expert of the UN Commission on Human Rights on the Rights to Development: http://www.unpchr.ch/development human development report 2009/10 occupied palestinnian territory page
http://www.Hdr/undp/org/en/media/premier_ch.2pdf page-71-75
http://hdr.undp.org/en/reports/global/hdr2010/papers/HDRP_2010_38.pdf
http://hdr.undp.org/en/reports/global/hdr2010/papers/HDRP_2010_39.pdf
http://hdr.undp.org/en/reports/global/hdr2010/papers/HDRP_2010_41.pdf
http://hdr.undp.org/en/reports/global/hdr2010/papers/HDRP_2010_42.pdf